Chap-7

7-अध्याय

हास्य-व्यंग्य काव्य का भाव पक्ष एवं कला पक्ष

7-अध्याय

हास्य-व्यंग्य काव्य का भाव पक्ष एवं कला पक्ष

कलापक्ष :-

आधुनिक हिन्दी साहित्य में साहित्यिक भाषा के रूप में खाड़ी बोली प्रतिष्ठित की गई है परन्तु हास्य-व्यंग्य साहित्यकारों ने अपने अन्तस्थल से कोई भी भाव अछूता नहीं छोड़ा है। आज हास्य-व्यंग्य कविताओं में खड़ी बोली में शब्दों की ब्रजभाषा अंग्रेजी, उर्दू, बगँला, पंजाबी आदि के शब्दों का प्रयोग होने लगा है। हिन्दी हास्य-व्यंग्य साहित्य के मूर्धन्य साहित्यकार काका हाथरसी की कविताओं में अंग्रेजी और उर्दू शब्दों का खुलकर प्रयोग किया गया है, इन शब्दों के प्रयोगों का उद्देश्य हास्य और व्यंग्य की लोकाग्रहीधारी को प्रवाहित करना होता है। तुकों के प्रवाह और असंगत भाषा से हास्य की सृष्टि होती है; हास्य-व्यंग्य को तीव्रता प्रदान करने के लियें काका हाथरसी ने तुकों का प्रवाह और अंग्रेजी, उर्दू शब्दों का प्रयोग किया है।

क) अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग :-

काका हाथरसी के काव्य में अंग्रेजी उर्दू के शब्दों का अत्यधिक प्रयोग किया गया है। काका ने अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग अन्य भाषाओं में भी किया है

1. फादर ने बनवा दिए, तीन कोट छैः पैन्ट।
लल्लू मेरा बन गया, कालिज-स्टूडैण्ट।
कालिज स्टूडैण्ट, हुए होस्टल में भरती।
दिन-भर-बिस्कुल चरें, शाम को खायँ इमरती। 1

उक्त पंक्तियों में 'फादर' कालिज स्टूडैण्ट आदि अंग्रेजी शब्दों के प्रयोग से ध्वनी को हास्य का बल मिलता है।

चक्कर चला चुनाव का, करने लगे रिसर्च,
मैटर, वैटर मिल गया, हुआ नहीं कुछ खर्च। 2

✻ ✻

कच्ची-पक्की बात से, वक्ता जोड़े लिंक,
भाषण शुरा निरोध कर, डेली करते ड्रिंक। 3

इन पंक्तियों में काका हाथरसी ने लिंक, ड्रिंक आदि अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग किया है। काका के काव्य में अंग्रेजी के शब्द ही नहीं, वाक्य और वाक्यांशों का भी प्रयोग हुआ है, जैसे में आई कम इन सर, यस, दिस इज द फैक्ट ऑल दीज आर बोर सब्जैक्ट, डोण्टरी, इट इज नैसेसरी, मैटर, माइट आदि अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग हुआ है -

'टिट फार टैट, बैटर फार दैट,
यू किल माई डाग, आई किल योर कैट।
मुरारजी भाई टोल्ड, गोल्ड हुआ सोल्ड
सेफ में रख दिया, कस दिया बोल्ट।
माइट इट राइट, ब्लैक इज हाइट,
यू आर रोंग, आइ एम राइट।
टैक्सिंग हाई, ट्राई -आन-ट्राई,
आई एम मिर्च यू आर खटाई।' 4

काका की हास्य-व्यंग्य कविताओं में अंग्रेजी लय के साथ शब्दों का प्रयोग किया गया है। जिसकी ध्वनि से हास्य उत्पन्न होता है।

उर्दू - पहन मुखौटे इल्म के, फितरत के संयार।
चले -सिखाते मंच से, हमको शिष्टाचार॥ 5

इन पंक्तियों में कवि योगेन्द्र मौदगिल ने उर्दू शब्दों का प्रयोग किया है।

कवि दिनेश रस्तोंगी के काव्य पंक्तियों में उर्दु शब्दों का प्रयोग मिलता है।

रोशनी के वास्ते सुरमा न हरगिज बेचिये,
दूसरे की आंख में कुछ, धूल कसकर झोकियें।
है अगरं साया किसी नेता का सिर पर आपके।
ठाट से गुरइियं जिस- तिस पे चाहे भौकिये। 6

खड़ी बोली का प्रभाव : - हास्य-व्यंग्य काव्य साहित्य में अधिकाशतः खड़ी बोली का प्रयोग होता है। साहित्य में काका हाथरसी का एक खड़ी बोली में उदाहरण इस प्रकार है -

काव्यकला में घुस गई, राजनीति स्फूर्ति,
कालिदास के मार्ग पर शास्त्री जी की मूर्ति।

शास्त्री जी की मूर्ति, बात क्या कहें पेट की,

कहते 'घी की गली', दुकाने घासलेट की।

'काका' डरते-डरते, 'सिहपुरी' में आए।

सिंह एक भी नहीं, भौकते कुत्ते पाए। 7

खड़ी बोली में कवि उमाशंकर मनमौजी का एक उदाहरण देखिए-

नेता भाषण दे रहे, करके निज-गुणगान,

भीड़-भयंकर देखकर, फूल उठे श्रीमान॥

फूल उटे श्रीमान, अन्त आभार जताये-

'धन्यवाद'! जो भीड़ बनाकर सुनने आये।'

कहँ 'मनमौजी' तभी किसी की आवाज आई

'भीड़ तो होगी, आज पेठ का दिन है भाई। ' 8

कवि प्रेम किशोर 'पटाखा' ने हास्य-व्यंग्य साहित्य में खड़ी बोली का उदाहरण प्रस्तुत किया है -

होना है चुनाव, हर नेता तेरे कस्बे में,

मुखड़े पे, नयी मुस्कान ले के आएगा,

लूट लेगा देश को लुटेरा, पर तेरे लिए,

'बचत करो, का अभियान ले के आएगा।' 9

हास्य-व्यंग्य साहित्य में खरी बोली को खूब प्रयोग किया गया है। काका हाथरसी का 'मौन स्वीकृति लक्षणम्' कविता से एक उदाहरण इस प्रकार है -

साष्टांग दंडवत स्वीकृति करिए प्रभो।

अहोभाग्य जो आज मिल गए आप अकेले। 10

डॉ गोपाल बाबू शर्मा ने अपने काव्य में खड़ी बोली में ये पंक्तियाँ लिखी है-

मान बैठे थे इसे अपना नगर,

पर यहाँ तो भेड़िए आए नज़र।

आज का कैसा अजब कानून है,

खून करके आदमी घूमे निडर॥ 11

ब्रजभाषा का प्रभाव : –

काका हाथरसी के काव्य में ब्रजभाषा की सुस्पष्ट झलक मिलती है। यद्यपि काका ने कुछ रचनाएँ शुद्ध ब्रजभाषा में भी लिखी है प्रधानता ब्रज-मिश्रित खड़ी बोली

की रचनाओं में है।

कहा कहूँ आज की, भले बने हो लाल,

या तन की झाई परै, वही है जाय निहाल।

वहि है जाय निहाल, रबरिया लेऊ हमारी,

आसा में ही बीती जाय, उमरिया सारी। 12

कवि अशोक अंजुम ने अपने काव्य में ब्रज भाषा का प्रयोग किया है -

ऊधौ, डिगीर हमें चिढ़ावै।

जो रिश्वत को नोट दै सके, सोई सरविस पावैं॥

भाई-भतीजावाद के बल पर अनपढ़ मौज उड़ावै।

दस पढ़ निकरें चपरासी के लाखों म्हों मटकावैं॥

लाकतंत्र की गति निराली, गधा पँजीरी खाते।

पी एच.डी की ऐसी-तैसी, निक्शा चलो चलावै। 13

सामासिक पद -

लोकतंत्र का मंदिर संसद वीरो की है भूमि निराली।

मंत्र- जाल क्रीड़ा स्वभाव की जिहाओ की तने गाली।

मेरी कवितामें अनुप्रास पर अनुप्रास जब आते है। मख्खी, मत्चार मोछित होकर, खच्चर खोपड़ी खुजाते है।

मेरे घरमें जब करुआ रस की चक्की चलने लगतीहै।

तो रोते-रोते नाना जी की नक्की चलने लगती है।

जब मैं रस्ते में चलता हूँ ,नर-नारी डरने लगते है।

आरम्भ वीर रस करता हूँ, तो कुत्ते लड़ने लगते है।

(2) श्लेष अलंकार का प्रयोग करते हुए काका हाथरसी लिखते हैं।

(रेलक के डिब्बे की बात)

यात्री बोले अकड़ कर क्या है इसका अर्थ

व्यंग्य के संदर्भ में अन्योक्ति अलंकार का प्रयोग

इधर भी गधे, उधर भी गधे,

देश में क्या हो रहा आदमी रो रहा है।

रस- हास्य, श्रृंगार, करुणा, वीर हास्य।

काका हाथरसी का ब्रजभाषा में एक और उदाहरण है–

परी है पिछारी जू काकी घरबारी आजु,
घर में घुसे हो तुम, बाजार चौं न जाओ जी?
पान लाउ धान लाउ, कपड़ा के थान लाउ,
नोंन–मिच्र–धनियों अरुः घनकुटा मंगाऔ जी। 14

काका के प्रहसनों में भी ब्रजभाषा के मिश्रित व विशुद्ध दोनों रूपों का दिग्दर्शन होता है।

डॉ. बरसाने लाल चतुर्वेदी ब्रजभाषी होने के कारण इनके काव्य में ब्रजभाषा का प्रयोग होता है।

'मम्मी' डैडी कहहु दुलारे सुनि मोहि आनन्द आवै,
मेरो लाल कान्वेंट जात है, इंग्लिश पोइम गावै।
'टा, टा, कहि जब विदा होत है रोम–रोम हरसावै।'
डाँस करत कजिन, 'सिस्टर' संग नन्द बाबा मुस्कावै,
बरसाने या छवि को निरखत अंग्रेजहु शरमावै। 15

बरसाने लाल चतुर्वेदी की काव्य भाषा में ब्रजभाषा का रूप ही दिखाई देता है।

होटलन में बैठि–बैठि 'डिनर' उड़ावे है।
तोद्वारे अफसर और लपका राजनीति के,
हटाओ गरीबी सब एक स्वर से गावे है,
कौन से छिपो है बताओ ये कटु सत्य,
लाखन नर–नारी यहाँ एक टेम खाते हैं।
सब मिलि दुरबीन लैके लगे हैं, ये,
गरीबी को रेखा तोऊ नाइ पाव हैं। 16

बँगला–मिश्रित हिन्दी :

काका की रचनाओं में बगँला के भी कुछ शब्दों का प्रयोग मिलता है। यह प्रयोग हास्य की सृष्टि के लिए किया गया है। बँगला के उच्चारण में 'अ' को ओ स को श है को हय, आदि का उच्चारण किया है।

क्या हय आजकल का कवि– गीतकार?
घिसा–पिटा भाव लेकर
माइक के सामने शिर हिलाता है।

शारश्वती ने ली है करवट, बदल रहा जुग,

चार पांक्तियाँ सुनो हमारी। 17

पंजाबी भाषा का प्रयोग :

काका के काव्य में बँगला की भांति पंजाबी भाषा का प्रभाव भी कुछ स्थलों पर देखने को मिलता है काका हाथरसी के हास्य-व्यंग्य काव्य में अनेंक भाषाओं का प्रयोग मिलता है। काका की कविता फुलझड़ियों में इसका प्रयोग है।

तुसी पजन (भजन) करना है कर बाहर जाके। 18

एक अन्य कविता 'स्लीपर' में साहित्य-चर्चा में भी एक स्थान पर ऐसी ही भाषा का प्रयोग किया गया है- ओ तुसीं चुपका भी होज्ञा, कवी राज दे बचे। 19

(2) अलंकार : अलंकरा का अर्थ है - आभूषण। आभूषण का कार्य सौन्र्दय की वृद्धि करना है। काव्य के क्षेत्र में यही कार्य अलंकारों का है। आचार्य दण्डी ने अलंकार कार लक्षण इस प्रकार दिया हैः

काव्यशोभाकरान्धर्मानलंकारप्रचक्ष्यते। 20

काव्य की शोभा बढ़ाने वाले धर्मी को अलंकार कहते है। अलंकारों का प्रयोग स्वाभाविक एवं सहज रूप में होना चाहिए। अलंकारों का प्रयोग सही एवं आवश्यकतानुसार किया जाना चाहिए. साठोत्तरी हास्य-व्यंग्य में अनेक अलंकारों का प्रयोग किया गया है।

(अ) शब्दालंकार-निरुपण :-

जिसमें चमत्कार शब्द के आश्रित होता है वह शब्दा अलंकार कहलाता है। मुख्य शब्दालंकार हैं- अनुप्रास, यमक, श्लेष, वक्रोक्ति और पुनरुक्तिप्रकाश।

(1) अनुप्रास :

जहाँ कथन में एक या कई वर्ण एक से अधिक बार एक ही क्रम में आएँ, भले ही उनमें स्वर की समानता न हो, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है। 'वर्णसाम्य' अनुप्रास।

काका हाथरसी ने काव्य में अनुप्रास अलंकार का प्रयोग इस प्रकार मिलता है।

कान-कीर्तिको ढूंढ़ने, क्यों जाते हो दूर,

कान-कृपा से 'कानपूर' शहर हुआ मशहूर।

कान्ह कृष्ण ने कान को जग में किया प्रसिद्ध,

'कानानाती कुर्र' कुँवर जी कैसे करते।

काका कवि की यह कविता, कैसे बन पाती। 21

उपर्युक्त पंक्तियों में 'क' कर्ण की अनेक बार आवृत्ति हुई है, इसलिए यहाँ वृत्यनुप्रास अलंकार है।

पहुँचा पैरोकार प्रभो उपकार कीजिए

'साधिकार' सुखकरा नोट पाकिट में धरिए।22

उर्युक्त उदाहरण में 'प' और 'स्' वर्ण की एक बार बार आवृत्ति हुई है। अतः यहाँ छे कानुप्रास है।

मग-मग में रतनन की जगमग में,

रागी मेंर ग-रंग में, रमत रमत है।

चंपा में, चमेली में, मिश्री की डेली में,

चेला में चेली में, किलत-किलकंत है। 21

उपर्युक्त पंक्तियों में 'स्', 'प्', 'र्', 'च', 'क्' वर्ण की अनेक बार आवृत्ति हुई है। अतः वृत्यानुप्रास है।

आते में, जाते में, दिखत-दिखत है।

मामा में मामी में, वीतरागी कामी में,

आम और आमी में, रसृरसवंत है। 23

इस उदाहरण में 'द्', 'म्', 'र्' वर्ण की आवृत्तियों में छेक और वृत्ति दोनों अनुप्रासों का समवेत सौन्दर्य देखा जा सकता है। 'वसन्त' कविता अनुप्रास अलंकार का सुन्दर उदाहरण है। काका हाथरसी के काव्य में अनुप्रास अलंकार का सुन्दर और प्रचुर मात्रा में प्रयोग किया गया है।

काका हाथरसी के अनुसार -

मेरी कविता में अनुप्रास पर अनुप्रास जब आते है

मख्छी, मच्छर, मोहित होकर, खच्चर खोपड़ी खुजाते है।

मेरे घर में जब करुणा रस की चक्की चलने लगती है।

तो रोते-रोते नाना जी की नक्की चलने लगती है,

जब मै रस्तेमें चलता हूँ, नर-नारी डरने लगते है।

आरम्भ वीर रस करता हूँ, तो कुत्ते लड़ने लगते है। 24

इस प्रकार काका हाथरसी के काव्य में अनुप्रास अलंकरा को स्थापित किया गया है।

(2) यमक अलंकार : जिस कथन में एक ही शब्द या वाक्यांश एक से अधिक बार प्रस्तुत हो, परन्तु उसके अर्थो में भिन्नता हो, वहाँ यमक अलंकार होता है। कुछ इसके उदाहरण इस प्रकार है -

(क) 'कर' कर-करके, चौगुने ठप्प किया व्यापार 25

(3) श्लेष अलंकार : जब कोई एक ही शब्द प्रसंग-भेद से भिन्न-भिन्न अर्थी को प्रकट करे, तो वहाँ श्लेष अलंकार होता है -

'वैज्यंतीमाला' तुम मोहन सोहत कण्ठ लगाई,
मै वाही कौ भक्त बन्यौ, परअब लौं हाथ न आई।26

(4) वक्रोक्ति अलंकार :- जब किसी कथन में श्रोता वक्ता के अभिप्रेत अर्थ से भिन्न आशय की कल्पना करके कथन करे तो इस कथन में वक्रोकित अलंकार होता हैः

पण कविता को भाव समझ में कोन्नी आयो।
सेठानी ने कहा- 'भाव' के पूछों वान्ने?
छे पाँती की कविता के दे दो छैः आने। 27

(5) पुनरुक्तिप्रकाश :- जहाँ एक शब्द का एक से बार ही अर्थ में प्रयोग होता है, वहाँ पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार होता है।

(क) हरे-हरे माला जपकर। 28

(ख) पड़े-पड़े ही पलंग पर, करें चाय का ध्यान। 29

(आ) अर्था अलंकार :

हास्य-व्यंग्य काव्य में अर्थालंकार का प्रयोग भी किया गया है। जहाँ उक्ति का चमत्कार अर्थ के आश्रित होता है वहाँ अर्थालंकरा माना जाता है।

1-. जहाँ उपमेय की उपमान के साथ समानता से विशिष्ट शोभा पर आधृत चमत्कार पाया जाये, वहाँ उपमा अलंकार होता है।

छोड़ पीजिए चाय, अमृत बीसवी सदी का,
जग-प्रसिद्ध है जैसे, गंगा जल गंग नदीं का। 30

आधुनिक युग में चाय की लोकप्रियता गंगजल के समान बतायी गई है। चाय को गंगा जल की उपमा भी दी गई है।

अमरीकन कट फेस हो, रशियन जैसे बाल,
चीनी जैसे गाल हों पाकिस्तानी चाल। 31

2. रूपक अलंकार :– जहाँ उपमेय और उपमान एकरूप हो जाते है- वहाँ रूपक अलंकार होता है।

काव्य कला की कोठरी, छन्दन जड़े किवार,
तारे लाग श्लेष के, भरे यमक अलंकार। 32
डियर ! बनकर दीजिए, ऐसा प्यारा पान।
ऐसा प्यारा पान, करारा होवे पत्ता,
लगे इश्क का चूना, और हुस्न का कत्था।
कहँ 'काका' कविराय, डाल चितवन की डाली,
नखरे वाली लींग लागना, इसमें आली। 33

रूपम अलंकार का एक और उदाहरण है।

रिश्वत रुपी पेड़ को, जोर–जोर झकझौर,
आँधी के ये आम हैं, दोनों हाथबटोर। 34

(3) उत्प्रेक्षा अलंकार :– हिन्दी के हास्य-व्यंग्य-काव्य में असका भी प्रयोग किया गया है। जहां उपमेय में उपमान की सम्भावना की जाती है, वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है।

तेरे घर की हुई दुर्दशा ऐसी भीमनि।
मानो, इसके ऊपर अणु बम फूट चुका है। 35

उपर्युक्त उदाहरण में 'घर की दुर्दशा' उपमेय में अणुबम के फूटने से विनाश उपमान की कल्पना की गयी है।

(4) स्मरण अलंकार : – किसी वस्तु को देखने पर उसके सदृश किसी पूर्वानुभूत वस्तु के स्मरण का कथन ही स्मरण अलंकार कहा जाता है।

तेरी भृकुटि–विलास, घड़ी की बाल–कमानी,
अपनी दाढ़ी में देखूँ तेरे केशों को।
कोमल सुधर कपोल मालपूओं में पाऊँ,
दादुर की वाणी में तेरे उपदेशों को। 36

(5) सन्देह अलंकार :: उपमेय में उपमान का संशय होने पर संदेह अलंकार होता है :

तेल लेऊ जी तेल, कड़कड़ी ऐसी बोली,
बिजुरी तड़के अथवा, छूट रही हो गोली। 37

(3) छन्द–विधान :-

छन्द-बद्धता अत्यन्त प्राचीनकाल से ही कविता का प्रमुख गुण रहा है। इन शब्दों को प्रयोग से काव्य में गेयता तो आती है, एक अनोखे प्रवहाका संचार भी होता है जिससे काव्य को पढ़ने, सुनने से आनन्द की प्राप्ति होती है। छन्दों के प्रयोग से कविता में सजीवता, सरलता, रमणीयता एवं सौन्दर्य की वृद्धि होती है। आजकल छन्द-मुक्त कविता का भी प्रयोग होने लगा है। छन्दों के प्रमुख भेद निम्नलिखित है।

(अ) मालिक छन्दः – मात्रा की गणना पर आधृत छंद मात्रिक छंद कहलाते है। जिसमें वर्णी की संख्या एवं क्रम भिन्न भी हो सकता है, किन्तु इसमें निहित मात्राएँ नियमानुसार होती है। जैसे दोहा, सोरठा, चौपाई, गीतिका, हरिगीतिका, कुंडिलया, रोला, उत्लाला, आँसू आदि।

(आ) वर्णित छन्द :- केवल वर्ण-गणना के आधार पर रचित छन्द वर्णित छन्द कहलाते हैं। जिस प्रकार मात्रिक छन्दों के प्रत्येक चरण में मात्राओं की संख्या समान रहती हैं उसी प्रकार वर्णिक छन्दों के प्रत्येक चरण में मात्राओं की संख्या समान होती है। जैसे-सवैया, इन्द्रवजाा, उपेन्द्रवज्रा, धनाक्षरी, वंशस्थ, बसन्ततिलका आदि।

(इ) मुक्त छन्द :- आधुनिकता कविता में मुक्त-छन्द का प्रयोग भी मिलने लगा है। मुक्त छन्, छन्द के बन्धन से मुक्त होते हैं, लेकिन उनमें लय (रिद्म) होती है,

(ई) छन्द मुक्त :- जैसा कि नाम से स्पष्ट् है, इधर ऐसी कविताएँ प्रचुर मात्रा में लिखी जा रही है, जो छन्द-बन्धन से नितान्त मुक्त हैं. इन कविताओं का आग्रह कथ्य पर है।

(अ) मात्रिक छन्द : इस छन्द-भेद के अन्तर्गत काका ने कुण्डलिया दोहा, चौपाई, पादकुलका गीतिका आदि और हिन्दी के कुछ नवीन मात्रिक छन्दों का प्रयोग किया है।

(1) कुण्डलिया–छन्द : इस छन्द में छह चरण होते है। इसके दो चरण दोहे के (13, 11 की यति से प्रत्येक छरण में 24 मात्राएँ और समचरण के अन्त में लघु और शेष चार चरण रोला के (11,13 की यति से प्रत्येक चरण में 24 मात्राएँ) होते हैं। इस प्रकार प्रत्येक चरण में 24 मात्राएँ और सम्पूर्ण छन्द में 144 मात्राएँ होती है। इस छन्द का पहला और अन्तिम शब्द समान होता है। दोहो का अन्तिम सम चरण रोला का प्रथम चरण होता है। काका की कुण्डलियों में प्रथम और अंतिम शब्द में कहीं-कहीं समानता नहीं है, वहाँ उन्होंने उसे कुण्डलिया न कहकर फुलझड़िया कहा है।

पाकिट में पीड़ा भरी, कौन सुने फरियाद?
यह महँगाई देखकर, वह दिन आते याद।
वह दिन आते याद, जेब में पैसे रखकर,
सौदा लाते थे बाजार मसे थैला भरकर।
धक्का मारा युग ने, मुद्रा की क्रेडिट में,
थैले में रूपये हैं, सौदा है पाँकिट में। 38

कवि ओमप्रकाश आदित्य के काव्य में सवैया का प्रयोग किया गया है।

आधुनिक युग से एवं साठोत्तरी हिन्दी की हास्य-व्यंग्य कविताओं में दोहा, छप्पय, सवैया, धनाक्षरी आदि का प्रयोग किया गया है।

(2) दोहा : पं. गोपाल प्रसाद व्यास की कविताओं में दोहे, धनाक्षरी का प्रयोग मिलता है।

पढ़ते समय मुझे, बचपन में अक्सर प्यास लगा करती थी
अंक गणित का घंटा आते, शंका खास जगा करती थी,
बड़े हुए तो मुझे इश्क के, दौड़े पड़ने लगे भयंकर,
हर लड़की की अम्मा, मुझको अपनी सास लगा करती थी।

इस मात्रिक छन्द के पहले और तीसरे (विषम) चरणों में 13 तथा दूसरे चौथे (सम) चरणों में 11 मात्रायें होती हैं। इस प्रकार प्रत्येक पंक्ति में चौबीस मात्रायें होती हैं। विषय चरण के प्रारम्भ में जगण (151) नहीं होना चाहिए और सम चरण के अन्त में लघु होना चाहिए।

(क) धवल वैध ऐसी सफल, दवा करे तजबीज,
दोनों को कर दे सफा, मर्ज रहे न मरीज। 39
(ख) है वकील बढ़िया वही, ऊँचा वही कहाय,
जिसकी ऊँची फीस सुन, भाग मवक्किल जाय। 40

भावपक्ष :- हिन्दी की साठोत्तरी हास्य-व्यंग्य कविताओं में सभी रसों का प्रयोग किया गया है। हिन्दी साहित्य में परिपृष्टि भाव का नाम ही रस है। काव्य में रसों का प्रयोग करने से तन्मयता आती है,

अग्नि-पुराण के अनुसार मुख्य रस चार माने जाते हैं - श्रृंगार, रौद्र, वीर तथा वीभत्स। इस चारों के आधार पर शेष रसों की उत्पत्ति होती है। श्रृंगार, रौद्र, वीर और वीभत्स, तथा उन्होंने भी श्रृंगार से हास्य की उत्पत्ति मानी है। भरतमुनि के अनुसार

- 'श्रृंगार रस की अनुकृति हास्य है।' 42

हास्य श्रृंगार :- हास्य रस के संदर्भ में काका हाथरसी ने कुछ पंक्तियाँ लिखी है -

सत्ता से टकार गई, हुश्न इश्क की रेल
मिस कीलर को हो गई, नौ महिने की जेल,
नौ महिने की जेल, खबर यह जिस-दिन आई
तब से हमने पानी पीया न रोटी खाई,
कह काका कवि कच्ची उमर सुकोमल काया
हे निर्मल कानून, तुझे कुछ तरस न आया।.
कवि आसी गाजीपुरी ने कुछ हास्य रसके शेर लिखे हैं-
हाय क्या बोध बुढ़ापे में भरा था अल्लाह,
सर तो सीने में घुसा पीठ कमर तक खम है। 43

कवि देहाती जी के इन दोहों में शुद्ध हास्य की अभिव्यक्ति है।

प्रिय आवत मग विलमगे, मिली सौति बेपीर।
मानों चलती रेल की खैची कोउ जंजीर॥
नेही सों मिलिबे चली तबलौ पिय गये आय।
विना टिकट के सफर में ज्यों चैकर मिलि जाय॥ 44

की बेधड़क जी ने अपने 'प्रियतम' से बजट पास कराने के माध्यम से शुद्ध हास्य की सृष्टि की है-

बिट्टी की शादी करनी है,
कल्लू का मुंडन करना है,
जी हुआ जनेउ कतलू का,
उसका भी कर्जा भरना है। 44

काका हाथरसी ने हास्य के माध्यम से वीर रस में ये पंक्तियाँ लिखी है -

चीनी के कम प्लेट तोड़ दो
जल तरंग के सेट तोड़ दो,
चीनी का प्रयोग छोड़ेंगे,
चीनी की गर्दन तोड़ेंगे।

***

अध्याय -7

संदर्भग्रन्थ-सूचि

1. काका की फुलझड़ियाँ काका हाथरसी । पृ. 17
2. काका की कारतूस, पृ. 45
3. हास्य कवि दरबार प्रेम किशोर पटाखा, पृ. 35
4. एक समीक्षा यात्रा काका हाथरसी डॉ. मिथिलेश पृ. 12
5. व्यंग्यमेव जयते योगेन्द्र मौद्गिल पृ. 10
6. रंग चकतलस अप्रैल-जून, 1999, पृ. 19
7. काका की फुलझड़ियाँ, पृ. 49
8. हँसो बत्तीसी फाड के प्रेम किशोर पटाखा, पृ. 29
9. हास्य कवि दरबार प्रेम किशोर पटाखा पृ. 41
10. पैरोडियाँ व कविताएँ काका हाथरसी पृ. 155
11. सूख गये सब ताल डॉ. गोपाल बाबू शर्मा पृ. 30
12. काका की फुलझडियाँ पृ. 47
13. खुल्लम खुल्ला अशोक अंजुम पृ. 150
14. काकादूत व अन्य कविताएँ काका हाथरसी पृ. 180
15. हास्य-व्यंग्य के विविध रंग बरसाने लाला चतुर्वेदी पृ. 16
16. श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य कविताएँ काका हाथरसी, गिरिराज शरण पृ. 99-100
17. पैरोडियाँ व कविताएँ काका हाथरसी पृ. 189-190
18. काका की फुलझड़ियाँ काका हाथरसी पृ. 86
19. पैरोडियाँ व कविताएँ काका हाथरसी पृ. 200
20. काव्यादर्श पृ. 2
21. फुलझड़ियाँ काका हाथरसी पृ. 75
22. फुलझडियाँ पृ. 76
23. काकादूत व अन्य कविताएँ पृ. 179
24. काका हाथरसी के अनुसार
25. काका की फुलझडियाँ पृ. 59
26. काकदूत की अन्य कविताएँ पृ. 25
27. काका की फुलझडियाँ पृ. 64
28. काकदूत व अन्य कविताएँ - 156
29. फुलझड़ियाँ पृ. 102
30. काका की फुलझडियाँ पृ. 102
31. काका की फुलझडियाँ पृ. 178
32. काका की फुलझड़ियाँ पृ. 66
33. फुलझिड़ियाँ पृ. 66
34. काका की फुलझड़ियाँ पृ. 264
35. काकदूत व अन्य कविताएँ पृ. 35
36. काकदूत व अन्य कविताएँ पृ. 34
37. काका की फुलझडियाँ पृ. 136
38. काका हाथरसी एक समीक्षायात्रा डॉ. मिथिलेश पृ. 192
39. काकदूत व अन्य कविताएँ पृ. 82

40. काकदूत व अन्य कविताएँ पृ. 112
41. श्रृंगारराज्ञायते हासो रौद्रातुकरुणों रसः वीरा च्चादभुत निष्पीत। स्याद्. वीभत्साद्, भयानकः अग्निपुराण
42. हिन्दी साहित्य में हास्य रस, बरसाने लाल चतुर्वेदी, पृ. 1
43. हिन्दी साहित्य में हास्यरस बरसामे लाल चतुर्वेदी पृ. 186
44. छेडछाड। पृ.स 11
45. धर्मयुग हास्यासांक, मार्च 1954